P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सांस्कृतिक धरोहर के प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण में पद्मभूषण पं. राजन साजन मिश्र का योगदान

सदाशिव गौतम
शोधार्थी,
संगीत विभाग,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत का वर्तमान परिष्कृत स्वरूप सदियों से चली आ रही समृद्ध परम्पराओं की परिणति है। सांगीतिक विकास की यात्रा में इसे प्रतिष्ठित करने में संगीत साधकों, तपस्वियों एवं प्रतिनिधि कलाकारों ने अपरिमित योगदान दिया है। विश्वविख्यात शास्त्रीय गायक पद्मभूषण पं. राजन–साजन मिश्र को मूर्धन्य एवं पथप्रदर्शक कलाकारों की श्रेणी में प्रमुख स्थान दिया जाता है। आप दोनों भ्राताओं ने ख्याल गायकी में परंपरागत दृष्टिकोण के साथ स्वचिन्तन का समन्वय कर गायन शैली को अभिनव, आकर्षक एवं हृदयग्राही स्वरूप प्रदान कर भारतीय संगीत को देश विदेश में लोकप्रिय बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई है।

आपने दुर्लभ एवं प्राचीन राग–रागिनियों के साथ नवीन रागों को भी घरानेदार गायकी के साथ सृजनात्मक एवं प्रयोगात्मक चिंतन से सुसज्जित कर अभिनव रूप प्रदान किया। सम्पूर्ण विश्व में भारतीय संगीत के प्रशंसक वर्ग में अभिवृद्धि करने में आपका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। बनारस घराने की लगभग 300 वर्षों से चली आ रही परंपराओं के संरक्षण एवं संवर्धन में उल्लेखनीय भूमिका के साथ–साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत को संपूर्ण विश्व में लोकप्रिय बनाने एवं कला की नई पीढ़ी में हस्तांतरण कर आप सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखने का भागीरथी कार्य कर रहे हैं। संगीत सम्मेलनों, आकाशवाणी, दूरदर्शन, कैसेट सी.डी., डी.वी.डी. आदि माध्यमों द्वारा संग्रहित आपकी गायकी सुधी श्रोताओं के साथ–साथ साधनारत शिष्यों एवं कलाकारों का सदैव मार्गदर्शन करती रहेगी। असाधारण व्यक्तित्व की धनी यह आदर्श युगल जोड़ी निश्चित रूप से संगीत रसिकों, साधनारत विद्यार्थियों एवं कलाकारों के लिए सदैव प्रेरणापुंज बनी रहेगी।

मुख्य शब्द : सांस्कृतिक धरोहर, गायन शैली, नवोदित प्रतिभा, प्रचार–प्रसार, परम्परा, संरक्षण, शास्त्रीय संगीत।

प्रस्तावना

हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के अविरल प्रवाहमान बने रहने और संगीतरूपी महक को कायम रखने में सदियों से संगीत के मनीषियों, तपस्वियों एवं साधक–कलाकारों का सतत् योगदान रहा है। शास्त्रीय गायकी हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इसके फलने–फूलने, सजने–सँवरने एवं उत्कृष्टता के शिखर पर पहुँचने में अनेकानेक संगीतज्ञों ने अमूल्य योगदान दिया है। महान् एवं गुणी कलाकारों के रचनात्मक, प्रयोगात्मक एवं अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण के फलस्वरूप शैलीगत विशेषताओं से आबद्ध संगीत मौलिक स्वरूप में रहते हुए भारतीय जनमानस को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व को आनन्द रूपी परब्रह्म की अनुभूति करा रहा है। इसी शृंखला में पं. राजन साजन मिश्र जी की गणना उन मूर्धन्य गायकों में होती है जिनकी चित्ताकर्षक गायन शैली की विशेषताओं से प्रेरणा लेकर अनेक शिष्य व साधक साधनारत् हैं।

बनारस में जन्मे पं. राजन साजन मिश्र अपने घराने की लगभग 300 वर्षों से चली आ रही परंपरा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। आपको गायन की शिक्षा विद्वान पिता पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र (ख्यातनाम सारंगीवादक एवं गायक) एवं चाचा पं. गोपाल जी मिश्र (ख्यातनाम सारंगीवादक) से मिली। आपको सौभाग्यवश गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी मिश्र का भी शिष्यत्व एवं आशीर्वाद मिला। बनारस के कबीरचौरा मोहल्ले के संगीतमय वातावरण में रहते हुए आपने ख्याल के साथ–साथ टपख्याल, टप्पा, तराना आदि की दुर्लभ एवं प्राचीन बंदिशों का अपार संग्रह करते हुए साधना एवं चिन्तन से गायन शैली को बेजोड़ एवं प्रभावशाली बना लिया। आपने स्वयं ने भी विविध रागों में सैंकड़ों बंदिशों की रचना कर भारतीय संगीत को समृद्ध बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण

कार्य किया है। आकाशवाणी दूरदर्शन, देश विदेश में आयोजित संगीत सम्मेलनों एवं विभिन्न नामी कम्पनियों द्वारा जारी रिकॉर्डिंग्स के माध्यम से आपकी गायकी के स्वर सर्वत्र गुंजायमान हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए आपके द्वारा की गई सेवा एवं योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण एवं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कुमार गंधर्व एवं तानसेन सम्मान जैसे पुरस्कारों से विभूषित किया गया। रागों के प्रति व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ उनमें दर्शन एवं आध्यात्मिक चिंतन की सोच आपके विराट व्यक्तित्व को दर्शाती है। बनारस घराने की परंपरा के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर पंडित राजन साजन मिश्र जी शास्त्रीय गायकी का प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण देश–विदेश में आयोजित कार्यक्रमों के अतिरिक्त विद्यार्थियों को प्रशिक्षण, व्याख्यान एवं प्रदर्शन और संगीत हेतु स्थापित संस्थाओं में भूमिका आदि माध्यमों से कर रहे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन के माध्यम से जनमानस का ध्यान भारतीय संगीत के परम्परागत आध्यात्मिक स्वरूप के प्रचार–प्रसार, संरक्षण एवं संवर्धन हेतु पद्मभूषण पं0 राजन साजन मिश्र द्वारा दिये गए अप्रतिम योगदान की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत रूपी सांस्कृतिक धरोहर के उत्तरोत्तर विकास एवं संरक्षण में प्रतिनिधि कलाकारों ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। इस श्रृंखला में युगल गायक पं0 राजन साजन मिश्र ने संगीत सम्मेलनों, प्रदर्शन–व्याख्यान, आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं रिकार्डिंग कम्पनियों के माध्यम से देश–विदेश में भारतीय संगीत का परचम फहराया है।

बनारस घराने की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने एवं गुरू शिष्य परम्परा के अन्तर्गत नवोदित प्रतिभाओं को प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु भ्रताद्वय द्वारा किये जा रहे कार्यों से संगीत जगत को मार्गदर्शन एवं प्रेरणा मिलेगी। मेरा मत है कि शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने एवं जनरूचि जाग्रत करने हेतु आपके द्वारा किये जा रहे सत्प्रयासों की जानकारी जन सामान्य को मिल सकेगी।

विद्यार्थी (शिष्य परंपरा)

पूरे देश में पं. राजन साजन मिश्र जी की विस्तृत शिष्य परंपरा है। पंडित जी बनारस घराने की परंपरा रूपी विरासत को सहेजने एवं नई पीढ़ी को हस्तांतरण हेतु विगत 4 से 5 दशकों से प्रयासरत हैं। गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत पारिवारिक सदस्यों के अतिरिक्त संगीत सीखने हेतु इच्छुक प्रतिभावान बच्चों को आप समर्पित एवं उदार भाव से शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। पं. राजन मिश्र जी के अनुसार ''हमारी अपनी ही गुरुकुल परंपरा चलती है देहरादून में, वहाँ हम बच्चों को सिखाते हैं और एडवांस ट्रेनिंग देते हैं।''[1]

गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत संगीत की शिक्षा प्रदान करने हेतु आपके द्वारा देहरादून में लगभग 20 वर्ष पूर्व गुरुकुल की स्थापना की गई है। सुरम्य एवं प्राकृतिक वातावरण के बीच पहाड़ियों पर स्थित गुरुकुल, संगीत शिक्षण हेतु पंड़ित जी द्वारा संजोयी गई कल्पना का साकार रूप है। पं. रजनीश जी मिश्र (पं. राजन जी मिश्र के कनिष्ठ पुत्र) यहाँ की सभी व्यवस्थाओं को सुनियोजित ढंग से संभालते हैं। उनके अनुसार ''देहरादून में बहुत खूबसूरत गुरुकुल बनाया पिताजी लोगों ने, उसमें हम सभी स्टूडेन्ट्स जाते हैं। वहाँ पिताजी के कहने पर हम लोगों ने हर महीने एक बैठक भी शुरू कर दी जिसमें कि बड़े–बड़े कलाकार भी आते हैं। साल में हम दो बड़े इवेंट करते हैं जो कि शहर के लोगों के लिए होते हैं। इनकी यह सोच थी कि देहरादून एक ऐसी सुकून वाली जगह है जहाँ हम म्यूजिक को बहुत अच्छे से संरक्षित कर सकते हैं और अच्छी सोच उसमें डाल सकते हैं, क्रिएटिवीटी वहाँ अच्छी हो सकती है। उसी सोच से गुरुकुल बना और सफल रूप से चल रहा है।''[2]

नवोदित प्रतिभाओं को प्रशिक्षण प्रदान करने एवं कला के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु स्थापित संस्थाओं का संचालन पं. रितेश मिश्र, पं. रजनीश मिश्र एवं पं. स्वरांश मिश्र द्वारा बखूबी किया जा रहा है। इन संस्थाओं में देहरादून स्थित गुरुकुल के अलावा रसिपा (पं. राजन एण्ड साजन मिश्र इंस्टीट्यूट ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स) संस्था द्वारा महान् संगीतकारों के प्रदर्शन, व्याख्यान एवं कार्यशालाओं के आयोजन आदि उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं।

अपनी गुरु शिष्य परंपरा और घराने की परंपरा के विषय में पं. राजन जी मिश्र कहते हैं ''देखिये हमारा संगीत परंपरा से ही जुड़ा हुआ है इसलिए शास्त्रीय संगीत कहा जाता है और यदि हम परंपरा छोड़ते जायेंगे तो इसकी शास्त्रीयता नहीं रहेगी। यह वेदों से चला आ रहा है इसीलिए इसे हम शास्त्रीय संगीत कहते हैं क्योंकि आज के युग में परिस्थितियाँ बदल रही हैं, परिवर्तन हो रहे हैं, समाज में हर तरह से परिवर्तन हो रहा है तो उसमें गुरु शिष्य परंपरा को कायम रखना बहुत ही मुश्किल सा हो गया है। फिर भी आज के जितने कलाकार हैं उनमें जो गुरु शिष्य परंपरा पर ही आधारित शिक्षा जो लोग ले रहे हैं वही लोग आगे की स्टेज पर आ पा रहे हैं।[3]

ऐसा क्यों हो रहा है इस पर पंडित जी आगे कहते हैं कि ''क्लास रूम में एक साथ बहुत सारे शिष्यों के साथ गुरु का वह कम्यूनिकेशन नहीं हो सकता है। गुरु शिष्य परंपरा में गुरु के साथ शिष्य रहता है। उनकी जीवन शैली का अध्ययन करता है, गुरु कैसे सोते हैं, गुरु कैसे उठते हैं, गुरु कैसे रियाज़ करते हैं, गुरु कैसे खाना खाते हैं इन सारी बातों का समावेश एक शिष्य को बनाने के लिए जरूरी है। कौनसा सुर किस मूड से लगाते हैं, कौनसी बंदिश कैसे गाते हैं, तो इसका आभास जब शिष्य गुरु के साथ रहता है तभी हो पाता है। इसलिए गुरु शिष्य परंपरा बहुत जरूरी है।''[4]

रियाज़ करते वक्त ध्यान रखने योग्य बातों एवं वॉइस कल्चर पर गुरु एवं शिष्य की भूमिका के बारे में पंडित जी का कहना है कि ''रियाज़ करते समय एक तो भगवान के प्रति आस्था होनी चाहिए। सरस्वती की आराधना कर रहे हैं, गुरु के चरणों के प्रति आस्था होनी चाहिए और ये गुरु का कर्तव्य है कि शिष्य का कान ऐसा तैयार करें जो खुद की कमजोरी को पहचान ले। उसका

जो वॉइस कल्चर बनता है वो खुद का एक तजुर्बा है, खुद का एक्स्पीरियेंस है। उस एक्स्पीरियेंस से जो वॉइस उसको खुद को अच्छा लगे वही उसके वॉइस कल्चर का हिस्सा है। इसलिए हम लोगों को हमारे गुरु लोगों ने ऐसी तालीम दी, ऐसी शिक्षा दी कि संगीत की ऐसी साधना करो जो तुम्हारे मन को खुद भाये। तुम खुद उस संगीत का आनंद ले सको ऐसा अपने आपको बनाओ तो हम लोग वैसा ही प्रयास करते हैं। अपने संगीत को हम खुद ही एन्जॉय कर सकें, अपने श्रोता खुद बन सकें यह हमारी कोशिश है।''[5]

पं. राजन साजन मिश्र जी की शिष्य परंपरा में अनेक वरिष्ठ, उदीयमान कलाकार एवं साधक सम्मिलित हैं। इनमें से कुछ कलाकार तो राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। पं. साजन जी मिश्र, पं. रितेश जी एवं पं. रजनीश जी मिश्र द्वारा गुरुपूर्णिमा 2017 के आयोजन के दौरान आपकी शिष्य परंपरा की जानकारी प्रदान की गई।

पं. राजन साजन मिश्र जी की शिष्य परंपरा में पं. रितेश मिश्र (ज्येष्ठ पुत्र पं. राजन मिश्र), पं. रजनीश मिश्र, (कनिष्ठ पुत्र पं. राजन मिश्र), पं. स्वरांश मिश्र, (पुत्र पं. साजन मिश्र) सहित अनेक कलाकार एवं साधकों की श्रृंखला में सर्व श्री भारत भूषण गोस्वामी, पंकज सदाफल, सारथी चटर्जी, रितु भारद्वाज, मोहन सिंह, सुखदेव सिंह, उमेश कम्पूवाले, रूपान्दे शाह, भोलानाथ मिश्र, सदाशिव गौतम, विराज अमर, कणिका पाण्डेय, प्रणव विश्वास, जसमीत कौर, सोनाली सिन्हा, शालिनी सिन्हा, तनु श्री, साजन सिंह नामधारी, अनुराग मिश्रा, दिवाकर प्रभाकर कश्यप, विवेक सचदेवा, मैत्री सान्याल, अमरीश मिश्रा, दीपक प्रकाश मिश्रा, दिव्या शर्मा, अभिश्रुति बेजबरुआ, शेष कुमार तिवारी, गरुण मिश्रा, अनूप मिश्रा, इन्दु भारद्वाज, सागर मिश्रा, डॉ. नुपूर सिंह, पूनम सहाय, सीमा अग्रवाल, महुआ चटर्जी, मंदाकिनी लाहिड़ी आदि बनारस घराने की गायकी को आत्मसात् कर रहे हैं।

गुरु पूर्णिमा का अनूठा आयोजन

संगीत के क्षेत्र में गुरु शिष्य परंपरा का सर्वाधिक महत्त्व है। यही वह क्षेत्र है जिसमें आज भी गुरु की शिष्य के प्रति सहृदयता एवं उदारता और शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण एवं कृतज्ञता का भाव दिखाई देता है। सच्चे पथ प्रदर्शक होने के साथ–साथ आपके स्वभाव में विद्यमान प्रेम, सहृदयता, उदारता, करुणा आदि गुणों के साथ कर्तव्य एवं दायित्व बोध के कारण शिष्यों से आपके आत्मीय संबंध स्थापित हो जाते हैं। आप दोनों के व्यक्तित्व में सहनशीलता का गुण है। गुरु पूर्णिमा उत्सव 2017 के दौरान यह देखने में आया कि कोई विद्यार्थी चाहे कितना ही सुरीला गा रहा है अथवा सामान्य गा रहा है आप सभी को समान दृष्टि से देख रहे हैं। इस सम्बन्ध में पं. राजन जी मिश्र ने चर्चा के दौरान प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए बताया कि ''जो विद्यार्थी संगीत में लगे हुए हैं उनको सबको प्रोत्साहन देना है। उनका कोई पेशन है, उनकी कोई चाह है तभी तो लगे हुए हैं।''[6]

प्रतिवर्ष पद्मभूषण पं. राजन साजन मिश्र जी के नई दिल्ली में रमेशनगर स्थित आवास पर गुरुपूर्णिमा के दिन बहुत ही सुन्दर एवं अनूठा आयोजन होता है। इस आयोजन का शुभारंभ सुबह आप दोनों एवं परिवारजनों द्वारा माँ सरस्वती एवं सभी गुरुजनों के चित्रों पर माल्यार्पण एवं पूजा–अर्चना के साथ होता है। प्रातः काल से रात के 10–11 बजे तक देश–विदेश में साधनारत शिष्यों एवं कलाकारों का घर पर आना–जाना लगा रहता है। इस दिन दोनों गुरुजी (पं. राजन मिश्र एवं पं. साजन मिश्र) की शिष्यों द्वारा पूजा एवं माल्यार्पण के पश्चात् सभी शिष्यों द्वारा बारी–बारी से हाजरी लगाने की परंपरा है। हाजरी लगाने के दौरान ही गुरुजी द्वारा शिष्यों को आशीर्वाद स्वरूप गायन को श्रेष्ठ बनाने हेतु उचित मार्गदर्शन एवं परामर्श दिया जाता है। इस दिन बड़े व छोटे गुरुजी और दोनों गुरुआनी जी का आशीर्वाद पाकर सभी शिष्य अभीभूत हो उठते हैं। गुरुपूर्णिमा के दिन आप दोनों का बनारसी अंदाज में लोगों से आत्मीयता से बतियाना, सभी शिष्यों का गुरुजी के समक्ष गाना बजाना सांगीतिक संस्मरण, अनुभव, आध्यात्मिक वार्ता, जीवन दर्शन आदि विषयों पर रोचक वार्ता के साथ–साथ गुरुजी के घर पर प्रसाद (भोजन) ग्रहण करने की अनिवार्यता इस उत्सव को अनूठा एवं अविस्मरणीय बना देती है।

कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ (व्याख्यान एवं प्रदर्शन द्वारा)

आधुनिक युग में व्याख्यान एवं प्रदर्शन पर आधारित संगीत कार्यक्रमों के दौरान कलाकार को दो प्रकार के श्रोताओं से रूबरू होना पड़ता है। प्रथम वर्ग में हम उन श्रोताओं को रख सकते हैं जिन्हें शास्त्रीय संगीत की कोई जानकारी नहीं है अथवा जो किसी विद्यालय या कॉलेज में अध्ययनरत हैं और वह प्रायः शास्त्रीय संगीत से अनभिज्ञ हैं। दूसरे वर्ग में वह श्रोता आते हैं जो प्रायः संगीत के विद्यार्थी, रसिक श्रोता, विद्वतजन एवं कलाकार और समीक्षक या आलोचक भी हो सकते हैं। दोनों ही वर्ग के श्रोताओं की जिज्ञासाओं को शान्त करना कलाकार का नैतिक दायित्व है।

पं. राजन साजन मिश्र जी की गायकी का प्रभाव यह है कि आप मंच प्रदर्शन के दौरान कला कुशलता के माध्यम से दोनों प्रकार के श्रोताओं के हृदय में सहजता से अपना स्थान बना लेते हैं। आपके द्वारा व्याख्यान एवं प्रदर्शन के द्वारा दी गई प्रस्तुतियों ने सभी वर्ग के श्रोताओं में सांगीतिक उन्नयन की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस दिशा में भारत की वैभवशाली समृद्ध कला–संस्कृति की महिमा को युवा पीढ़ी में प्रसारित करने के उद्देश्य से ''स्पिक मैके'' द्वारा किए गए प्रयासों में महान् युगल गायक जोड़ी ने भरपूर योगदान दिया। पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''स्पिक मैके ने तो एक बहुत रिवोल्यूशनरी काम किया है, लोगों को भारतीय वाद्ययंत्रों, संगीत एवं संस्कृति से परिचय करवाने का। स्पिक मैके शुरू हुआ था 1977 में और हम लोग 1978 से जुड़ गये और अभी तक जुड़े हुए हैं।''[7]

डॉ. हुकुम चन्द के अनुसार ''स्पिक मैके का मूल उद्देश्य भारतीय पारम्परिक संस्कृति से उनके मूल रूप से परिचय कराना है, ताकि युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति के गरिमापूर्ण सौंदर्य एवं वैभवशाली समृद्ध कलाओं की महिमा को केवल जाने ही नहीं, आत्मसात् भी करे। उसके प्रति संवेदनशील रह कर समन्वयवादी मानवीयता के मूल चिन्तन का आधार पा सके। भारतीय शास्त्रीय संगीत

हज़ारों हज़ार साल से मानवीय अभिव्यक्ति का मुख्य साधन रहा है। आज भी अपनी क्षमता से यह कलाएँ युवाओं की मृतप्राय मानसिकताओं को जीवन्त करने में पूर्णरूपेण सक्षम हैं।''[8] पं. राजन साजन मिश्र जी ने स्पिक मैके द्वारा श्रृंखलाबद्ध तरीके से आयोजित ''लेक्चर एण्ड डेमोस्ट्रेशन'' के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी निभाकर समाज में सांस्कृतिक चेतना जागृत करने का पुनीत कार्य किया।

डॉ. हुकुम चन्द ''सव्याख्या प्रस्तुति'' के बारे में लिखते हैं कि यह ''स्पिक मैके'' की कार्यशैली का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसका मुख्य उद्देश्य एक ऐसे दर्शक वर्ग का विकास करना है जो शास्त्रीय सांस्कृतिक कलाओं का रसास्वादन कर सके। इस प्रकार के कार्यक्रमों की श्रृंखला शैक्षिक सत्र के आरम्भ में ही सम्पन्न होती है अर्थात् अगस्त, सितम्बर में इसमें कलाकार अपनी कला की मूलभूत बारीकियों को गहराई से तथा मार्मिक ढंग से समझाते हैं तथा अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। इसी श्रृंखला के अतिरिक्त भी सव्याख्या प्रस्तुतियाँ नियमित अन्तराल में समय–समय पर स्कूलों कॉलेजों में सम्पन्न की जाती है। इनमें प्रदर्शन नितान्त औपचारिक होता है।''[9]

अतः हम कह सकते हैं कि सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर भारतीय शास्त्रीय संगीत से अपरिचित श्रोताओं को विशेषकर नई पीढ़ी को, दर्शक एवं श्रोता वर्ग में सम्मिलित करने व संस्कृति से जोड़ने में पं. राजन साजन मिश्र जी ने अतुलनीय योगदान देकर हमारे संगीत को आमजन में प्रतिष्ठित करने का प्रमुख कार्य किया है।

व्याख्यान एवं प्रदर्शन से संबंधित दूसरा श्रोता वर्ग वह है जिसमें संगीत के जानकार लोग होते हैं। इसके अन्तर्गत संगीत शिक्षा से जुड़े विद्यार्थी, कलाकार, विद्वान, समीक्षक एवं आलोचकों के साथ रसिक श्रोता भी सम्मिलित रहते हैं। इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन प्रायः संगीत के विद्यार्थियों एवं गुणी श्रोताओं के बीच होता है। ये कार्यक्रम कलाकार की साधना के लिए एक चुनौती होते हैं। शास्त्रीय गायकी के अंतर्गत आपने परंपरागत शैली के साथ सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पहलुओं का संतुलन बिठाकर गायन शैली के सृजन में रचनात्मक, एवं प्रयोगात्मक नवाचारों को शास्त्रीय मर्यादा के अंतर्गत उचित स्थान दिया है। यही कारण है कि आपका गायन विद्वानों व गुणीजनों के चहुँ और एक सुरमयी आवरण बनाकर गुणी श्रोताओं को उसमें निमग्न रखते हुए आनन्द एवं आत्मसुख की अनुभूति कराता है।

पं. राजन साजन मिश्र जी ने देश–विदेश के महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, सांगीतिक संस्थाओं एवं संगीत गोष्ठियों के माध्यम से प्रदर्शन–व्याख्यान कार्यक्रमों द्वारा अपने अनुभव एवं ज्ञान से गुणी श्रोताओं कलाकारों एवं विद्वतजनों की जिज्ञासाओं का समाधान कर उन्हें लाभान्वित किया है।

प्रचार एवं संरक्षण हेतु स्थापित संस्थाओं में भूमिका

विदेशों में भारतीय संगीत के प्रचार प्रसार, प्रोत्साहन, शिक्षण एवं प्रदर्शन हेतु अनेक संस्थाएँ, विद्यालय और विश्वविद्यालय कार्य कर रहे हैं। पं. राजन साजन मिश्र उन प्रमुख भारतीय कलाकारों में सम्मिलित हैं जिनके अथक प्रयासों से भारतीय संगीत की पहचान विश्व पटल पर बनी। आपने विदेशों में भारतीय संगीत हेतु स्थापित सांस्कृतिक केंद्रों के माध्यम से संगीत के प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विदेशों में स्थापित प्रमुख केन्द्र ''एशियन म्यूज़िक सर्किट'' के बारे में डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू लिखती हैं ''आर्ट्स काउंसिल ऑफ ग्रेट ब्रिटेन ने 1989 ई. में एशिया के संगीत के प्रदर्शन, संरक्षण, ध्वन्यांकन, शिक्षण, शोध आदि पल्लवन कार्यों के उद्देश्य से एशियन म्यूज़िक सर्किट की स्थापना की। 1991 ई. से इसका संचालन कार्य आर्टस काउंसिल ऑफ इंग्लैंड के द्वारा दी गई अनुदान राशि से नियमित एवं स्वतंत्र रूप से होता चला आ रहा है और इंग्लैण्ड में एशिया के संगीत के प्रोत्साहन का कार्य करने के लिए ही इस संस्था का लगातार विकास होता चला आ रहा है। यूरोप की इस महत्त्वपूर्ण म्यूज़िक कम्पनी की पहुँच एशिया के संगीत को प्रोत्साहन देने, संगीत उत्पादन के कार्यों और उच्च दर्जे के सांगीतिक शिक्षणात्मक पर्यटनों के प्रबन्ध करने में हैं। इस काम को परिपूर्ण करने में कम्पनी के निजी एशियन म्यूज़िक सेन्टर का अत्यधिक योगदान हैं, जहाँ संगीत वाद्य, दृश्य और श्रव्य संगीत संग्रहालय हैं और दूरदराज के लोगों के सांगीतिक आदान प्रदान के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से ऑन लाईन और ऑफ लाईन सुविधा प्राप्त करवाने का प्रयोजन है।''[10] ''इसके अलावा प्रपत्र पढ़ने का आयोजन, कार्यशालाओं का आयोजन, एशियन वाद्यों का परिरक्षण, अलग–अलग क्षेत्रों से संबंधित महान् संगीतकारों को बुलवाकर योजनाबद्ध तरीके से शिक्षार्थियों को हर सम्भव सहायता उपलब्ध करवाना आदि महत्त्वपूर्ण कार्य किए जाते हैं।''[11]

यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि एशियन म्यूज़िक सर्किट की तरफ से प्रदर्शन कर चुके कुछ मुख्य कलाकारों में पं. राजन साजन मिश्र जी का नाम अग्रणी कलाकारों में सम्मिलित है। ''आप एशियन म्यूज़िक सर्किट से वर्ष 1989 से अभी तक निरन्तर जुड़े हुए हैं। इस संस्था के माध्यम से लंदन के रॉयल अलबर्ट हाल सहित यूनाइटेड किंगडम के सभी बड़े शहरों में आप कार्यक्रमों का आयोजन कर भारतीय संगीत को प्रचारित प्रसारित करते रहे हैं।''[12]

''अमेरिका में रह रहे देशवासियों को विश्व की सभी संगीत शैलियों की समृद्धता से परिचित करवाने के लिए और सीखने सिखाने के उद्देश्य से वर्ल्ड म्यूज़िक इंस्टीट्यूट की स्थापना की गई। यह संस्था व्यवसायिकता को ध्यान में लेकर विश्व के हर कोने से पारम्परिक और समकालीन संगीत प्रदर्शन, संगीत में शिक्षण और शोध कार्य के प्रोत्साहन के लिए संगीत समारोहों (कंसर्टों) का आयोजन करवाती है। एशिया के देश भारत के संगीत को विश्व में परिचित करवाने और योग्य स्थान दिलवाने में इस संस्था के द्वारा करवाए गए कार्यक्रमों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।''[13]

1986 से 2006 तक भारतीय कलाकार, जो वर्ल्ड म्यूज़िक इंस्टीट्यूट के माध्यम से प्रस्तुत किए जा चुके हैं उनमें पं. राजन साजन मिश्र जी का नाम प्रमुख कलाकारों में सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त आपको इंडियन क्लासिकल म्यूज़िक सर्किट ऑफ ऑस्टिन (ICMCA), द

सेन्टर ऑफ परफोर्मिंग आर्टस ऑफ इण्डिया (यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्सबर्ग) जैसे अनेकानेक शिक्षण संस्थानों द्वारा कंसर्ट और संगीत संभाषणों के पर्यटनों के लिए आमंत्रित किया जाता रहा है।

भारतीय संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने में योग साधक महर्षि महेश योगी ने अद्वितीय कार्य किया है। ''भारतीय वेदान्त दर्शन की महत् शाखा योग पद्धति और उसके साथ–साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत का विश्व भर में प्रचार कर क्रांति पैदा करने में महर्षि महेश योगी का नाम समूचे विश्व में प्रसिद्ध हुआ।''[14] महर्षि महेश योगी जी द्वारा भारतीय संस्कृति एवं विश्व शांति हेतु किए गए प्रयासों में पं. राजन साजन मिश्र जी द्वारा भारतीय संगीत के प्रति विदेशों में सम्मान, निष्ठा और आस्था विकसित करने के क्रम में एवं आध्यात्मिक भाव जाग्रत करने हेतु विशेष योगदान दिया गया। उनके माध्यम से आयोजित कार्यक्रमों के साथ–साथ उनके द्वारा जारी किए गए सी. डी. एवं एलबम हमारी सांगीतिक धरोहर है। पं. साजन जी मिश्र के अनुसार ''एक रिकॉर्डिंग हॉलैण्ड से निकली महर्षि महेश योगी जी के लिए, 24 सी. डी. का वह रिकॉर्ड पैक था और वह बहुत पॉपुलर है यूरोप में, खासकर अमेरिका में, हर घर में वह मिल जाता है।''[15]

अतः राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों एवं शिक्षण संस्थानों के माध्यम से पं. राजन साजन जी ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को प्रतिष्ठित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय संगीत की राष्ट्र एवं विश्वव्यापी पहचान बनाने में आपने जिन सरकारी व गैर सरकारी संगठनों एवं संस्थाओं के माध्यम से अनथक प्रयास किए उनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं :–

1. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली (ICCR)
2. संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली।
3. इंदिरा गाँधी नेशनल सेन्टर फॉर द आर्टस एण्ड मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर, नई दिल्ली।
4. स्पिक मैके (Society for the Promotion of Indian Classical Music and Culture Among Youth)
5. एशियन म्यूज़िक सर्किट
6. वर्ल्ड म्यूज़िक इंस्टीट्यूट

भारत सरकार के प्रमुख सांस्कृतिक संगठनों में पं. राजन साजन मिश्र अपनी भूमिका निभा रहे हैं। पं. रितेश जी मिश्र के अनुसार ''सांस्कृतिक मंत्रालय में सलाहकार के रूप में, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली (ICCR) द्वारा निर्णायक के रूप में एवं संगीत नाटक अकादमी में भी सलाहकार के रूप में पिताजी व चाचाजी को आमंत्रित किया जाता है।''[16]

अतः पं. राजन साजन मिश्र जी कला जगत में विविध भूमिकाओं का निर्वहन पूर्ण निष्ठा, दायित्व व कर्तव्य बोध के साथ करते हुए कला जगत के सच्चे पथ प्रदर्शक बन न केवल देश अपितु सम्पूर्ण विश्व की सेवा कर रहे हैं।

अन्य (वेबसाइट, सी. डी. विडियो, कैसेट्स एवं साहित्य)

आपने घरानेदार गौरवशाली परंपरायुक्त समृद्ध गायन शैली का प्रचार–प्रसार संचार के विविध माध्यमों से जैसे कैसेट, सी डी, डी वी डी एवं अनेकानेक वेबसाइट्स के द्वारा किया है। आपके गायन की रिकॉर्डिंग्स लगभग सभी प्रतिष्ठित कम्पनियों जैसे सी बी एस, एच एम वी, मेगनासाउण्ड, म्यूज़िक टुडे, टी–सीरीज़, बी एम जी, वीनस, सोनी, टाइम्स म्यूज़िक, आदि से जारी हुई हैं। इनके साथ–साथ अनेक विदेशी कम्पनियों द्वारा भी आपके गायन के रिकॉर्ड्स जारी हुए हैं। विस्तृत अध्ययन से ज्ञात होता है कि बहुत–बड़ी संख्या में आपके गायन के रिकार्ड्स जारी हो चुके हैं। यह सभी रिकार्ड्स हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं और ऑडियो–विडियो के वर्तमान में प्रचलित विविध माध्यमों के द्वारा शास्त्रीय संगीत का निरन्तर प्रचार–प्रसार हो रहा है।

इनके अतिरिक्त आपने देश में आयोजित विभिन्न संगीत प्रतियोगिताओं एवं टीवी शो जैसे टीवीएस सा रे गा मा, बिग बाल कलाकार एवं नवोदित प्रतिभाओं हेतु आयोजित आइडिया जलसा जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से निर्णायक एवं मार्गदर्शक कलाकार की प्रमुख भूमिका निभाकर नई पीढ़ी में भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिरुचि जाग्रत करने हेतु महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं।

सच्चे कलाकार, सहृदयी होने के साथ–साथ संगीत के माध्यम से समाज में जनकल्याण, शांति, भ्रातृत्व, समता एवं विश्वबंधुत्व आदि मूल्यों की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। इसी महान् उद्देश्य की पूर्ति हेतु पं. राजन साजन मिश्र जी ने विश्वविख्यात संत एवं धर्मगुरु श्री श्रीरविशंकर जी द्वारा स्थापित संस्था 'द आर्ट ऑफ लिविंग'' के अन्तर्गत दिनांक 12 जनवरी 2010 को आयोजित कार्यक्रम 'अन्तर्नाद' के माध्यम से 2750 शास्त्रीय गायक गायिकाओं के साथ शास्त्रीय गायन प्रस्तुत कर संगीत एवं आध्यात्म के समन्वय का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत कर विश्व इतिहास रच दिया। अन्तर्नाद शीर्षक के अन्तर्गत आपने दो कार्यक्रमों में भाग लिया। एक कार्यक्रम 'वन्दे मातरम्' में पार्श्वगायक शंकर महादेवन के साथ आध्यात्मिक गुरु श्री श्रीरविशंकर एवं पं. राजन साजन मिश्र ने गायन में भागीदार बनकर कार्यक्रम को अविस्मरणीय बना दिया। दूसरा प्रमुख कार्यक्रम 'माँ बसंत आयो रे' में राग बसन्त बहार में पं. बड़े रामदास जी द्वारा रचित तीनताल में निबद्ध बंदिश को 2750 शास्त्रीय गायक–गायिकाओं ने पं. राजन साजन मिश्र जी के नेतृत्व में प्रस्तुत कर विश्व रिकार्ड कायम किया।

पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''अन्तर्नाद कार्यक्रम श्री श्रीरविशंकर जी ने आयोजित किया था। इसमें हमारी बंदिश (माँ बसन्त आयो रे) को 2750 लोगों ने गाया और 'गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' में दर्ज हुआ। बसन्त बहार की इस बंदिश को पहले हमने सी डी में गाकर भेज दिया था तो जितने भी गायक–गायिकाएँ थे ग्रुप में, सबको वह भेज दिया गया। उन्होंने रियाज़ किया फिर एक दिन पहले हम वहाँ पहुँचे तो एक दिन रिहर्सल हुआ उसके बाद वो कार्यक्रम हुआ।''[17]

उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम के लिए जहाँ इतनी बड़ी संख्या में शास्त्रीय गायक–गायिकाओं को एक प्लेटफार्म पर लाया गया उसी के अनुरूप 27000 स्क्वायर फीट का स्टेज बनाया गया। लगभग 8:30 मिनट की इस भाव विभोर कर देने वाली प्रस्तुति में पंडित जी द्वारा बसंत ऋतु का बहुत सुंदर साक्षात्कार करवाया गया है। यह

ध्वन्यांकन सचमुच में केवल एक विश्व रिकॉर्ड ही नहीं अपितु विश्व धरोहर बन पड़ा है।

निष्कर्ष

प्रकृति एवं अध्यात्म से अनुप्रेरित एवं उद्‌भूत भारतीय शास्त्रीय संगीत के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार हेतु युगल गायक पं. राजन साजन मिश्र द्वारा किए गए कार्य भावी पीढ़ी को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं। सामाजिक विकास के प्रवाह के साथ कला के क्षेत्र में नित नए कीर्तिमान स्थापित कर आपने परंपरा के साथ नवाचारों का प्रयोग कर गायकी को अद्‌भुत स्वरूप प्रदान किया है। कला मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का सुंदर माध्यम है और महान कलाकार उसे मूर्त रूप प्रदान कर चिंतन एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति से नया आकार प्रदान करते हैं। हाल ही में वर्ल्ड म्यूजिक टूर 2018–19 के माध्यम से पंडित जी की युगल गायकी के सुर विश्व के लगभग सभी प्रमुख शहरों में गुंजायमान हुए। भारत की सांस्कृतिक अस्मिता से सम्पूर्ण विश्व को रूबरू करवाते हुए आपने सम्पूर्ण विश्व को विश्वबंधुत्व एवं शांति का संदेश दिया है। निश्चित रूप से पं. राजन साजन मिश्र हमारे देश की सांस्कृतिक निधि हैं।

संदर्भ

1. *पं. राजन जी मिश्र (Story of Renowned classical singer Pt. Rajan Sajan Mishra) (https://www.youtube.com)*
2. *पं. रजनीश मिश्र (Story of Renowned classical singer Pt. Rajan Sajan Mishra) (https://www.youtube.com)*
3. *पं. राजन जी मिश्र (वृंदावन गुरुकुल धरोहर) www.youtube.com*
4. *पं. राजन जी मिश्र (वृंदावन गुरुकुल धरोहर) www.youtube.com*
5. *पं. राजन जी मिश्र (वृंदावन गुरुकुल धरोहर) www.youtube.com*
6. *पं. राजन जी मिश्र : वार्ता–गुरु पूर्णिमा, दिनांक 10.07.2017, नई दिल्ली*
7. *पं. राजन जी मिश्र : वही, 12.07.2014, नई दिल्ली*
8. *डॉ. हुकुम चन्द : आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत, पृ. सं. 102*
9. *डॉ. हुकुम चन्द : आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत, पृ. सं. 103*
10. *डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू : आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, पृ. सं. 181*
11. *डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू : आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, पृ. सं. 183*
12. *www.amc.org.uk*
13. *डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू : आधुनिक अंतर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, पृ.सं. 185–186*
14. *डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू : आधुनिक अंतर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, पृ. सं. 296*
15. *पं. साजन जी मिश्र (Story of Renowned elessical singer Pt. Rajan Sajan Mishra) (https://www.youtube.com)*
16. *पं. रितेश जी मिश्र – वार्ता, गुरुपूर्णिमा 2017*
17. *पं. राजन जी मिश्र : वार्ता– गुरुपूर्णिमा, दिनांक 10.07.2017, नई दिल्ली*